(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

भारतीय महाकाव्य "वाल्मीकि रामायण" में प्राकृतिक सौंदर्य का वस्तु चित्रण

डॉ नीरज कुमारी

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

THE DEPICTION OF NATURAL BEAUTY IN THE INDIAN EPIC "VALMIKI RAMAYANA"

Dr. Neeraj Kumari

Associate Professor, Sanskrit Department

Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

ABSTRACT

Nature has an important place in Ram Katha. The story area, despite being related to human life, is inextricably linked with forests, groves, ashrams, mountains, rivers, gardens, seas, etc. The natural elements related to this are essential integral parts of the story. Therefore, the storytellers of the era have used nature according to the need and description / observation ability. Many forms of nature depiction are accepted in the poetic tradition. By giving examples of these forms of nature from criticism-poetry-Valmiki Ramayana, the related beauty and elegance will also be analysed.

सारांश

राम कथा में प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है ।कथा क्षेत्र मानव जीवन से संबंधित होते हुए भी वन-उपवन, आश्रम, पर्वत, नदियों वाटिका समुद्र इत्यादि से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है । एतद् सम्बन्धी प्राकृतिक तत्व कथा के आवश्यक अभिन्न अंग हैं । अतः युगीन कथाकारों ने आवश्यकता एवं वर्णन / निरीक्षण क्षमता के अनुसार प्रकृति का उपयोग किया है । कवि परम्परा में प्रकृति चित्रण के अनेक रूप स्वीकृत हैं । इन्हीं प्रकृति रूपों के उदाहरण आलोच्य-काव्यों- वाल्मीकि रामायण से देकर तविषयक सौन्दर्य, लालित्य का भी विश्लेषण किया जायेगा ।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

परिचय

महाकाव्य में महत् जीवन की व्याख्या सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक परिवेश से होती है । संस्कृत के प्राचीन काव्य-शास्त्र के विद्वानों ने मानव मन के रागात्मक सम्बन्धों के लिए शेष सृष्टि वर्णन को अनिवार्य कहा है। जिनमें समुद्र, पर्वत, चन्द्रोइय, सूर्य, ऋतुओं के परिवर्तित स्वरूप, सरस / विरस रूप में मानव की प्रतिक्रिया, नदी-सरोवर का चित्रण आवश्यक बताया है-

(क) नगरार्णव शैलस्तु चन्द्रार्कोदय वर्णनैः ।

उद्यान सलिल क्रीड़ा मधुपान रतोत्सवैः ।।

(ख) संध्या सूर्येन्दु रजनी प्रदोषाध्वान्त वासराः ।

प्रातर्मध्याहून मृगया शैलर्तुवन सागराः।

डॉ० श्याम सुन्दर दास ने प्रकृति चित्रण के सम्बन्ध में लिखा है कि प्रकृति की ओर मानव निसर्गतः आकृष्ट होता रहता है । ऐसा इसलिए है, क्योकि उसकी इससे वासनाओं की तृप्ति होती है । इस नैसर्गिक आकर्षण का परिणाम यह होता है, कि मनुष्य प्रकृति के उन चित्रों को अपने दुःख के रस से सिक्त कर अभिव्यंजित करता है। वे विभिन्न कलाओं के रूप में प्रकट हो, मानव हृदय को रसान्वित करते हैं।

यहाँ यह लिखना असंगत नहीं होगा कि प्रकृति से हमारा जिसके साथ हमारा आशय उस विस्तृत मानवेतर जगत से है जिसके साथ हमारा रागात्मक सम्बन्ध अनादि एवं अक्षुण्ण है, जिसकी ममतामयी क्रोड़ में पल कर मानव विकास पथ पर आगे बढ़ा है, जिसके विषय में वैज्ञानिकों का विकासवाद एवं आस्तिकों की अपौरुषेय सृष्टि कल्पना दोनों में ऐकमत्व है कि मानव ने इस मानवेतर जगत की (प्रकृति) सन्निधि एवं सहयोग में रहकर ही जन्म एवं जीवन-उत्कर्ष की परिणति प्राप्त की है, और जिसकी अखण्ड महिमा का आभास डॉ० किरण कुमारी गुप्त ने इस शब्दों में व्यंजित किया है । "वास्तव में प्रकृति यदि मानव की माता नहीं तो धात्र अवश्य है । आरम्भ से प्रकृति अपनी ममतामयी क्रोड़ में मानव को धारण करती है और उसका पोषण करती है। वायु व्यंजन करता, निर्झरों का कल-कल संगीत नक्षत्र गण गुप-चुप कहानियाँ कहते, कलियाँ चुटकी बजा-बजा कर उसे अपने पास बुलाती x X X X X प्रकृति की गोद में मानव सुख का अनुभव करता है और उसका साहचर्यजन्य मोह का स्वाभाविक रूप से उसके हृदय में प्रादुर्भाव हो जाता है। इसी भाँति आलम्बन रूप से प्रकृति मानव को प्रभावित करती है और उसे आकर्षित करती है ।""

प्रकृति का आलम्बन रूप-

वाल्मीकि रामायण तो प्रकृति की अक्षय निधि है । उसमें प्रकृति के कोमल, कठोर, विभिन्न वृक्षों, फूलों के षड्ऋतु-वर्णन की पुष्ट परम्परा दिखाई पड़ती है । वाल्मीकि आरण्यक है । प्रकृति के न जाने किन-किन रूपों का दर्शन उन्होंने किये होंगे, जिनका चित्रण यथेच्छ रूप में किया है। इसी प्रकार रामावतार पोद्दार ने

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

अरुण रामायण में मिथलांचल की नैसर्गिक सुषमा का चित्रांकन मनोयोग से किया है । ग्राम्य वनस्पतियाँ पेड़-पौधे, कुल्याएँ, हरी-भरी झाड़ियाँ, विश्वामित्र और राम-लक्ष्णम को ही नहीं आकृष्ट करती, अपितु पाठक को आह्लादित कर देती हैं ।

(क) प्रकृति का कोमल रूप-

(1) सुप्राज्य फल मूलानि पुष्पितानि वनानि च ।

प्रशस्त मृग भूथनि शान्त पक्षि गणानि च ।।

फुल्ल पंकज खंडानि प्रसन्न सलिलानि च ।

कारण्डव विकीर्णानि तटकानि सरांसि च ।।

(२) नीवारान् पनसान् सालान वंजुलांस्ति निशांस्तथा ।

चिरि बिल्वान् मधूकांश्च बिल्वनथ च तिन्दुकान् ।

पुष्पितान् पुष्पिताग्रभि लताभिरूप शोभितान् ।।'

(ख) कठोर रूप-

(१) विद्युत्पताका सबला कमाला - शैलेन्द्र कूटाकृति संनिकाशाः ।

गर्जन्ति मेधाः समुदीर्णनादा मत्ता गजेन्द्रा इव संयुगस्थ|

(२) तडित्पताकाभिर लंकृताना मुदीर्ण गंभीर महारवाणाम् ।

विभान्ति रूपाणि बलाहकानां रणोत्सुकानामिव वारणानाम् ।।

नामपरिगणन प्रणाली का उपयोग कवि ने स्थलीय वैशिष्ट्य के रूप में किया है वाल्मीकि में प्रकृति के अलाम्बन रूप का जितना सूक्ष्म विस्तृत सौन्दर्यपरक चित्रण, एतद् सम्बन्धी जड़ी-वनस्पतियों, पेड़-पौधों, जंगली मृगों का उल्लेख हुआ है, सम्भवतः किसी भी राम काव्य के लिए ये चित्रण प्रस्थान रूप में दिखाई देंगे ।

सालैस्तालै स्तमालै खर्जूरैः पनसै द्रुमैः ।

नीवारै स्तिनिशे श्रेच्च पुन्नागैश्चोपशोभिताः । ।१६ ।।

चुतैरशोकैस्तिलकैः केतकैरपि चम्पकैः ।

पुष्पगुल्मल्ती पे तैस्तैस्तैस्तउभिरावतृताः ।19७ ।।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

स्पन्दनै श्रचन्दनै नींपैः पर्णासैर्ल कुचैरपि ।

ध्वाश्रकर्णरूदिरैः रामीकिंशुकपाटलैः ||१८||

(२) प्रकृति का संश्लिष्ट चित्रण-

वाल्मीकि ने षड्ऋतु वर्णन का संश्लिष्ट चित्रण किया है, उन्हों ने परिवेश के सूक्ष्म निरीक्षण तथा जीव जन्तुओं के प्रभावों का जीवन्त एवं मूर्तिमन्त चित्रण किया है ।

"अवश्यायनिपातेन किंचित्प्रक्रित्रशाद्वला ।

वनानां शोभते भूमिर्निविष्ठतरुणातया ।।

स्पृशन् सुविपुलं शीतमुदकं द्विरदः सुखम् ।

अत्यन्ततृषितो वनः प्रतिसंहरते करम् ।।"

प्रकृति का उद्दीपन रूप-

मानव जीवन की यह विशेषता होती है, कि वह अपने भावों के अनुरूप और अनुकूल प्राकृतिक तत्वों को देखना चाहता है । प्रकृति उसके सुख में सुखी और दुख में दुखी चित्रित की जाती है। इसी को प्रकृति का उद्दीपन रूप कहते हैं । साहित्य निविष्ट पात्र के भावोल्लास एवं आत्म तन्मयता में प्रकृति का सहयोग कवि वर्णित करता है ।

अरविन्दोत्पलवतीं पद्यसौगन्धिका युताम ।

पुस्पताग्रवणो येतां बर्हिणोदघुष्टनादिताम ।।

स तां दृष्टा ततः पम्पां रामः सौमित्रिणा सह ।

विलाप च तेजस्वी रामो दशरथात्मजः ।।

(२) तत्राम्बरादगिरति पृवृद्धो

रुक्षप्रभः किशुकपुण्यचूड़ः ।

निर्वाणधूमाकुलराजयश्च

लीलोत्पलाभाः प्रचकाशिरे ऽभ्राः ।।

हा तात हा पुत्रक कान्त मित्र

हा जीवितेशाङ्ग हतं सुपुण्यम् ।

रक्षोभिरेवं बहुधा बुर्वाद्धः

शब्दः कृतो घोरतरः सुभीमः ।।

प्रकृति का आलंकारिक रूप-

मानवीय सौन्दर्य के लिए कवियों को प्रकृति से सुन्दर और कोई दूसरा उपादान नहीं है, इसीलिए कवि नारी-पुरुष की अंगिक दीप्ति कान्ति-सौकुमार्य की तुलना प्रकृति से करते हैं । वाल्मीकि तो मिसर्ग के सिद्ध कवि हैं, उन्होंने पात्रों के लिए उपमान रूप में प्रकृति का बहुविधि उपयोग किया या यह उपयोग एक ओर व्यक्ति और प्रकृति की समता बताता है, सौन्दर्य की सृष्टि करता है, तो दूसरी ओर साम्य मूलक अलंकारों का निदर्शन भी हुआ है।

केचिद् रजतसंकाशाः केचित् क्षतमसंनिभाः ।

पीतमं जीष्टवर्णाश्च केचिन्मणिवरप्रभाः ।।

पुण्यार्ककेतकाभाश्च केचिज्ज्योतीरसप्रभाः ।

विराजन्ते ऽचलेन्द्रस्य देशा धातुविभूषिताः ।।'

ताम्यां स परिपूर्णाभ्यां भुजाभ्यां राक्षसे श्ररः ।

शुशुभे ऽचलसं काशः शंडाभ्यामिव मन्दराः ।।

तरुणादित्यवर्णाभ्यां कुण्डलाभ्यां विभूषितः ।

रक्तपल्लवपुष्पाभ्यामशो काम्यामिवाचलः ।।

स कल्पवृक्षप्रतिमो वसन्त इव मूर्तिमान् ।

श्मशानचैत्यप्रतिमों भूषितोऽपि भयंकरः ।।

तात्पर्य यह है कि वाल्मीकि रामायण में प्रकृति का व्यापक आग्रह के कारण मिलता है क्योंकि कवि विस्तीर्ण रूप कथागत वीतरागी अरण्यवासी है।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

अन्य वस्तु वर्णन-

पहले लिखा जा चुका है कि महाकाव्यों में प्रकृति के विविध रूपों के साथ मानव जीवन के विविध व्यापार का चित्रण शास्त्रीय आवश्यकता है । इस चित्रण से एक ओर कवि के काव्य जगत का व्यापक विस्तार दिखाई देता है। तो, दूसरी ओर उसकी विविध विषयक ज्ञान बहुज्ञता चमत्कार प्रियता और पांडित्य प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। इस क्रम में प्राकृतिक तत्वों में संध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, दिन, प्रातः पर्वत, वन, नदी, समुद्र आते हैं, तो दूसरी ओर मानव जीवन से सम्बन्धित वस्तुओं में से नगर आश्रम उपवन, बाग इत्यादि का चित्रण कवि परम्परा में विहित है ।

(1) सूर्य – कवि ने सूर्य के अनेक बिम्ब उपस्थित किये हैं- जैसे- प्रातः मध्याहून संध्या । वाल्मीकि रामायण में सूर्य का वर्णन इस प्रकार किया गया है ।

पूर्वमेतत् कृतं द्वारं पृथिव्या भुवनस्य च।

सूर्यस्योदवनं चैव पूर्वा द्वोषा दिगुच्यते ।

विभिन्न ऋतुओं में सूर्य की स्थितियों का वस्तुगत चित्रण वाल्मीकि जैसा कवि ही कर सकता है; जैसे- हेमन्त ऋतु की शोभा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि दक्षिणायन सूर्य की शोभा से दक्षिण दिशा तो प्रकाशित होती है, किन्तु उत्तर दिशा तिलक विहीन स्त्री की भांति दिखाई देती है । हिमालय से दूर रहने के कारण सूर्य की उष्णता उतनी प्रखर नहीं रहती । वाल्मीकि में संन्ध्या के विविध रूप चित्रित हैं-

कस्चिनस्य च शैलस्य सूर्यस्य च महात्मनः ।

आविष्टा तेजसा संध्या पूर्वा रक्त प्रकाशते ।।

सांध्यकालीन सूर्य का चित्रण करते हुए अनसुइया ने सीता से कहा है कि दिन में भोजनार्थ जो पंछी विविध स्थानों में गये थे, अब संध्याकाल में नींद लेने के लिए घोसले में छिप गये हैं, और आश्रमों में हवन कर्म का धूम ऊपर उठता हुआ सूर्य के प्रकाश से मिलकर एक नये रंग को उत्पन्न कर रहा है ।

दिवसं परिकीर्णनिमाहारार्थ पतत्रिणाय् ।

संध्याकाले विलीनानां निद्रार्थश्रूयते ध्वनिः ।।

विलीयभाने विहगैर्निमीलभिश्च पंकजैं ||

विक सन्त्या च मालत्या गतो ऽस्तं ज्ञायते रविः ।।'

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

(२) चन्द्रः-

रात्रि वर्णन प्रसंग में चन्द्र का चित्रण दोनों कवियों ने किया है । वाल्मीकि में इस विषय के अनेक दृश्य बिम्ब मिलते हैं-

रवि संक्रान्तसौभाग्यस्तुषाररुणमण्डलः ।

निःश्वासान्ध इवादर्शच्चिन्द्रमा न प्रकाशते ।।

ज्योत्सा तुषारमिलना पौर्णमास्यां न राजते।

सीतेव चातपश्यामा लक्ष्यते न च शोभते ।।

चन्द्रोऽपि सचित्यमिवास्य कुर्व

स्तारागणैर्मध्यगतो विराजन् ।

ज्योत्स्नावितानेन वितरस्य लोका

नतिष्ठते ऽनेकसहस्ररश्मिः ।।

शंखप्रभं क्षीरमृणालवर्ण

मुद्धचछमानं त्यवभासमानम् ।

ददर्श चन्द्र स कवि प्रवीरः ।

पोल्यूमानं सरसीव हंसम् ।।

नगर वर्णन-:

राम कथा में मुख्य रूप से अयोध्या मिथिला किष्किन्धा एवं लंका का आधिकारिक कथा से सम्बन्ध है, है, इसे साथ ही प्रासंगिक / उपकथाओं में अनेक जनपदों / नगरों का वर्णन, महलों की शोभा, निवासियों का वैभव रहन-सहन इत्यादि का बहुविधि वर्णन है । यहाँ प्रमुख कुछ नगरों का संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है ।

अयोध्या- यह ऋग्वेदिक काल का नगर है। इसे मनु ने बसाया था । उसके परवर्ती वंशधरों ने इसको अनेक प्रकार से अलंकृत किया। दशरथ के राज्य / जनपद को सल की यह राजधानी है । इसकी शोभा का वर्णन वाल्मीकि ने इस प्रकार किया है-

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

कोशलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान् ।

निविष्टः सरयू तीरे तत्रासील्लोकं विश्रुता ।

मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम् ।

आयता दश च च योजनानि महापुरी ।

श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा सुविभक्त महापथा ।

तां तु राजा दशरथो महाराष्ट्र विवर्धनः ।

पुरी मावासयामास दिवि देव पतिर्यथा ।

कपाट तोरणवलीं सुविभक्तान्तपराणाम् ।

सर्व यंत्रायुधवती मुषिता सर्व शिल्पिभिः ।।'

लंकापुरी- स्वर्णमयी लंका रावण की राजधानी ही नहीं, अपितु भौतिक सम्पदा से सम्पन्न सागर वेष्टित ऐसी नगरी है, जिसे सूक्ष्म वेशधारी हनुमान जैसे समर्थ वानर ही देख सकते हैं । वाल्मीकि ने नगरी, पवर्त - शिखर वहाँ के जलाशय, उद्यानों का इतिवृत्तात्मक रूप में वर्णन किया है-

स तस्मिन्नचले तिष्ठन बनान्युपवनानि च ।

स नगाग्रे स्थितों लंकां ददर्श पवनात्मजः ।

परिखाभिः सपद्माभिः सोत्पलाभिरलंकृताम ।

कांचनेनावृतां रम्यां प्राकारेण महापुरीभ ।

गृहैश्च गिरि संकाशैः शारदाम्बुद संनिभै ।

पाण्डुराभिः प्रतोलीभिरुच् याभिरभि संवृताम् ।।

अट्टालक शता कीर्णा पताकाध्वजशेभिताम् ।

गिरिमूर्हिन स्थितां लंका पाण्डुरैर्भवन शुभैः ।

ददर्श स कपिः श्रीमान् पुरी माकाश गाभिव ।

वप्रप्राकार जघनां विपुलाम्बुवनांबराम् ।

शतघ्नी शूल केशन्तमट्टालकावतंसकाम् ।।

मनसेव कृतां लंका निर्मितां विश्वकर्मणा ।।

अयोध्या और लंका के पश्चात् अन्य नगरों का उल्लेख मात्र हुआ है, जिसमें अंग देश, मिथिला, वत्स, कोसल, श्रृंगवेरपुर, किष्किंधा हैं । भरत के अयोध्या आगमन के समय कुछ अप्रचलित, अचर्चित ग्रामों, नगरों का उल्लेख मात्र है । अरुण रामायण में मिथिला एवं उसकी संस्कृति का मनोरम वर्णन किया है ।

आश्रम वर्णन-

राम कथा में विश्वामित्र भरद्वाज, वाल्मीकि, सुतीक्ष्ण अगस्त्य सहित ऋषि-मुनियों के अनेक आश्रमों का उल्लेख हैं, जहाँ राम जाकर ऋषियों से मार्ग-दर्शन प्राप्त करते हैं।

(1) तत्राश्रमपदं पुण्यमृषीणां भावितात्मनाम् ।

बहुवर्ष सहस्राणि तप्यतां परमं तपः ।

(२) दारुणि परिभिन्नानि वनजैरूप जीविभिः ।

छिन्नाश्वाप्याश्रमें चैते दृश्यन्ते विविधां द्रुमाः ।।

(३) स ब्राह्मणस्याश्रमभ्युपेत्य

महात्मनो देव पुरोहितस्य ।

ददर्श रम्योटज वृक्ष देशम्

महद्वनं विप्रवरस्य रम्यम् ।

(४) प्रविष्टस्तु वनं घोरं बहुपुष्प फल द्रुमम् ।

ददर्शाश्रिममेकान्त चीरमाला परिष्कृताम ।।

तत्र तापसमासीनं मल पंकज धारिणम् ।

रामः सुतीक्ष्णं विधिवत् तपोधनंमभाषत ।।

(५) नीवारान् पनसान् सालान् वंजुलांस्तिनिशांस्तथा ।

चिरि बिल्वान् मधूकांश्च विल्वानथ च तिन्दुकान् ।

ददर्श रामः शतशस्तत्र कान्तार पादपान् ।।

स्निग्धपत्रा यथा वृक्षा यथा क्षान्ता मृग द्विजाः ।

आश्रमो नातिदूरस्था महर्षेर्भावितात्मनः ।। "

नदी वर्णन-

प्रारम्भिक युगीन सभ्यताएँ नदियों के आस-पास ही विकसित हुई है, क्योंकि इनसे आवागमन में सुविधा रहती हैं राम कथा में सरयू, गंगा, यमुना, गोदावरी तथा अन्य छोटी-छोटी नदियों का उल्लेख है। नदियों का विशाल एवं स्वच्छ जल, लहरें, तटवर्ती वृक्षावलियों की शोभा का चित्रण आलोच्य काव्यों में हुआ है-

तस्मात सुस्राव सुरसः सायोध्यामुपगूहते ।

सरः प्रवृत्ता सरयू पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता ।

अयं शोणः शुभ जलोऽगाधः पुलिनमंडितः ।

ताँ दृष्ट्या पुण्य सलिलां हंस सारस सेविताम् ।।

तत्र त्रिपथगां दिव्यां शीततोयाम शैवलाम ।

ददर्श राघवो गंगा रम्यामृषि निषेविताम् ।।

देव क्रीड़ाशता कीर्णां देवोद्यानयुतां नदीम् ।

देवार्थमाकाश गतां विख्यातां देव पद्मिनीम् ।।

जलाघाताट्टहासो ग्रांफेन निर्मल हासिनीम् ।

क्वचिद् वेणीकृत जलां क्वचिदावर्त शोभिताम् ।।

समुद्र - वरुणालय समुद्र सलिल राशि से समाकुल दिखाई ही पड़ता है, परन्तु उस सलिल राशि के अन्दर मुख्य रूप से मत्स्य, ग्राह, सर्प, रत्न, जल-जन्तु, कच्छपादि निवास करते हैं, जिसके दूसरे तट का कोई ओर-छोर नहीं दिखाई पड़ता है । वानर सेना के समक्ष यह अनन्त प्रतीत होता है । राम अपने बाण से इसे वशीभूत करते हैं-

सागरस्योर्मि जालानामुरसा शैल वर्ण्यणाम ।

अभिन्धस्तु महावेग पुप्लवे स महा कपिः ।

तस्य वेग समुदघुष्टं जलं सजलदं तदा ।

अंबरस्थं विबभ्राजे शरद भ्रमि वाततम् ।।'

तोय वेगः समुद्रस्य समीन करो महान् ।

स बभूव महाधीरः समारुतश्वस्तथा ।।

महोर्मि माला विततः शंख शुक्ति समावृतः ।

सधूमः परिवृत्तोर्मि सहसा सीन्म होदधिः ।

उद्वेलित अंबुधि को बिलोकि प्रभु मौन मुदित।

वाल्मीकि रामायण में समुद्र की विभिन्न प्रतिछवियाँ अंकित हैं । सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय सूर्य का सिन्दूरी बिम्ब, चन्द्र को स्पर्श करने हेतु लालायित समुद्रीर्मियाँ, मेघ गर्जन सदृश लहरों का उत्ताल आघात, नक्षत्रखंचित रात्रि का प्रतिबिम्बिन अत्यन्त भव्य एवं आकर्षक रूप में चित्रित है। अरुण रामायण में समुद्र-शक्ति- रावण के अधीन कही गयी हैं । सीतान्वेषण के लिए तट पर आगत वानरों को यह समुद्र अथाह एवं भयानक लगता है, किन्तु सेतुबन्धन के समय यह शान्त, सुस्थिर प्रतीत होता है । रावण इस अणु-शक्ति सम्पन्न समुद्र में शक्ति विस्फोट करता है, तभी राम इस शक्ति को वशीभूत कर लेते हैं ।

शैल वर्णन -:

भूधर, अचल आदि के रूप में सामान्य पर्वतों का उल्लेख कवियों ने किया है, किन्तु चित्रकूट ऋष्यमूक, प्रस्रवणगिरि एवं त्रिकूट / सुबेल पर्वत और उस पर स्थित विविध वृक्ष-लताओं, पक्षियों, औषधियों का विवरणात्मक/ संश्लिष्ट चित्र आलोच्य दोनों कवियों ने किया हैं वाल्मीकि ने गौण / सहायक / कमैतर पात्रों से सम्बन्धित पर्वतों का वर्णन किया है । वाल्मीकि का सूक्ष्म निरीक्षण हमें उनकी सौन्दर्य दृष्टि की ओर आकृष्ट करता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

(१) चित्रकूट- राम के चित्रकूट - प्रवास के समय इस गिरि का वर्णन हुआ है। अचलेन्द्र चित्रकूट का चित्रण दो बार किया गया है। राम के चित्रकूट प्रवेश एवं भरतागमन पर -

मातंगयूथानुसृतं पक्षि संधानुनादितम् ।

चित्रकूट मिमं पश्य प्रवृद्ध शिखरं गिरिम् ।।

समभूमि तले रम्ये द्रुमैं र्बहुभिरावृते ।

पुण्ये रंस्यामहे तात चित्रकूटस्य कानने ।।

तं तु पर्वतमासाद्य नाना पक्षि गणायुतम ।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

बहु मूल फलं रम्यं सम्पन्न सरसोदकम् ।।

मनोज्ञो ऽयं गिरिः सौम्य नाना द्रुम लतायुतः ।

बहुमूल फलो रम्यः स्वाजीव प्रतिभाति में ।।

सुरम्य भासादय तु चित्रकूट

नदीं च तो माल्यवती सुतीर्याम

ननन्द दृष्टो मृग पक्षि जुष्टां

जहाँ च दुःखं पुर विप्र वासात ! ।।

चित्रकूट की शोभा से कवि बहुत नैकट्य का अनुभव करता है। राम सीता को चित्रकूट के शिखर, गिरती हुई जलधाराओं, बनैले पशुपक्षियों का चित्रण नयनाभिराम रूप में करते हैं-

पश्येममचलं भद्रे नानाद्विज गणायुतम् ।

शिखरैः खमिवबोद्धिद्वैर्धानुमदि विभूषितम् ।।

पुण्यार्क केतकाभाश्च केचिज्ज्योतीरस प्रभाः ।

विराजन्ते ऽचलेन्द्रस्य देशा धातुविभूषिताः ।।

नाना मृगगणै द्वीपितरक्ष्वृक्ष गणैर्वृतः ।

अदुष्टैर्भात्ययं शैलो बहु पक्षि समाकुलः ।।

जल प्रतातै रुदे दैर्निष्पन्दैश्च क्वचित क्वचित् ।

सर्वभित्यिर्य शैलः स्रवन्मदइव द्विपः ।

गुहा समीरणो गंधान् नाना पुष्प भवान् बहून् ।

प्राण तर्पणमभ्येत्य कं नरं न प्रहर्षयेते ।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

प्रसवण गिरिः- सुग्रीव के राज्याभिषेक के पश्चात् चातुर्मास व्यतीत करने के लिए राम ने इस गिरि का चयन किया था। वाल्मीकि ने इसका वर्णन वस्तु परक रूप में किया है-

आजगाम सह भ्रात्रां रामः प्रस्रवणं गिरिम् ।

शार्दूल मृग संघुष्ट सिंह र्भीमरवैर्वृतम् ।

नाना गुल्म लता गूढं बहु पादप संकुलम् ॥

गिरि श्रृंगमिदं रम्यमुत्तमं पार्थिवात्मज ।

श्वेताभि कृष्णताम्राभिः शिलाभिरूप शोभितम् ।।

नाना धातु समाकीर्ण नदी दर्दुर संयुतम् ।

विविर्धवृक्ष षण्डेश्च चारू चित्र लतायुक्तम् ।।

मालती कुन्द गुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीष कैः ।

महेन्द्र पवर्तः - हनुमान द्वारा समुद्रोल्लंघन प्रसंग में इस पर्वत का उल्लेखख इस प्रकार हुआ है ।

आरुरोह नग श्रेष्ठ महेन्द्रमरि मर्दनः ।

वृतं नाना विधैः पुण्पैर्मृग सेवित शाद्वलम् ।

लता कुसुम संम्बाधं नित्य पुष्प फल द्रुभम् ।।

सिंह शार्दूल सहितं मत्त मातंग सेवितम् ।

मत्त द्विज गणोद्दुष्टं सलिलोत्पीडसंकुलम् ।।

उपसंहार

कवि प्रकृति के पल-पल परिविर्तित रूप को देख मुग्ध ही नहीं हुआ, उससे सुख-दुःख का अनुभव ही नहीं किया, अपितु पात्रगत भावनाओं की अभिव्यंजना अपने पुष्कल सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि से किया है। प्रकृति के विशाल प्रांगण में रामकथा के सभी पात्र किसी न किसी रूप में आश्रय लिए हुए चित्रित किये गये हैं । जबकि रामायण में उसके कोमल मसृण उपदेशकारी यत्र-तत्र परमसत्ता के रूप में निदर्शक प्रकृति का चित्रण हुआ है । यह चित्रण कथा की आवश्यकतानुसार तो हैं ही। प्रकृति चित्रण शैली के अनुरूप भी है। वाल्मीकि रामायण के प्रकृति चित्रण में विविधता है और सबसे बड़ी चीज चाक्षुष प्रत्यक्षीकरण हैं, यही वाल्मीकि का वैशिष्ट्य हैं ।

(IJPS) 2021, Vol. No. 11, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

सन्दर्भ

1. काव्यादर्श- दंडी, १/१६ एवं काव्यालंकार, रुद्रट - १६/१३
2. वाल्मीकि रामायण ३१५/२१-२२
3. वाल्मीकि रामायण- २/६४/५-६
4. वाल्मीकि रामायण - ५/२२/२७-२६
5. सा० द० ६१३२१
6. साहित्यालोचन, प्र०-७
7. हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण-पृ०- 99
8. वा. श०, ३/११/७५-६
9. वा. रा० ४/२८-३१
10. वा०रा० ३/१५/१६-१८
11. वा०रा० ३/१६/२०-२१

REFERENCES

1. Kavyadarsh - Dandi, 1/16 and Kavyalankar, Rudrat - 16/13
2. Valmiki Ramayana 315/21-22
3. Valmiki Ramayana - 2/64/5-6
4. Valmiki Ramayana - 5/22/27-26
5. S.D. 61321
6. Literary criticism, Q. 7
7. Illustration of Nature in Hindi Poetry - Page 99
8. V. Sh., 3/11/75-6
9. V.R. 4/28-31
10. VA 03/15/16-18
11. VA 03/16/20-21